॥ ७ - धूमावती महाविद्या स्तोत्र एवं कवचम् ॥

अनुक्रमाणिका

माँ धूमावती

धूमावती यन्त्र

॥ माँ धूमावती ॥

दस महा विद्याओं में धूमावती माता सातवीं महाविद्या कहलाती हैं। तन्त्र ग्रन्थोंके अनुसार धूमावती उग्रतारा ही हैं, जो धूम्रा होने से धूमावती कही जाती हैं। दुर्गासप्तशती में वाभ्रवी और तामसी नाम से इन्हीं की चर्चा की गयी है। ऋषि दुर्वासा, भृगु, परशुराम आदि की मूल शक्ति धूमावती हैं।

इनके सन्दर्भ में कथा आती है कि एक बार भगवती पार्वती भगवान् शिव के साथ कैलास पर्वतपर बैठी हुई थीं। उन्होंने महादेव से अपनी क्षुधा का निवारण करने का निवेदन किया। कई बार माँगने पर भी जब भगवान् शिव ने उस ओर ध्यान नहीं दिया, तब उन्हों ने महादेव को ही उठाकर निगल लिया। उनके शरीर से धूमराशि निकली। शिवजी ने उस समय पार्वती से कहा कि 'आपकी सुन्दर मूर्ति धूएँ से ढक जाने के कारण धूमावती या धूम्रा कही जायगी।' धूमावती महाशक्ति अकेली है तथा स्वयं नियन्त्रिका है। इसका कोई स्वामी नहीं है, इसलिये इसे विधवा कहा गया है।

दुर्गासप्तशती के अनुसार इन्होंने ही प्रतिज्ञा की थी 'जो मुझे युद्ध में जीत लेगा तथा मेरा गर्व दूर कर देगा, वही मेरा पति होगा। ऐसा कभी नहीं हुआ, अत: यह कुमारी हैं', ये धन या पतिरहित हैं अथवा अपने पति महादेव को निगल जाने के कारण विधवा हैं।

नारदपाञ्चरात्र के अनुसार इन्होंने अपने शरीर से उग्रचण्डिका को प्रकट किया था, जो सैकड़ों गीदड़ियों की तरह आवाज करने वाली थी, शिव को निगलने का तात्पर्य है, उनके स्वामित्व का निषेध। असुरों के कच्चे माँस से इनकी अंगभूता शिवाएँ तृप्त हुईं, यही इनकी भूखका रहस्य है।

इन के ध्यान में इन्हें विवर्ण, चंचल, काले रंगवाली, मैले कपड़े धारण करने वाली, खुले केशोंवाली, विधवा, काकध्वज वाले रथपर आरूढ़, हाथ में सूप धारण किये, भूख-प्यास से व्याकुल तथा निर्मम आँखों वाली बताया गया है। स्वतन्त्रतन्त्र के अनुसार सती ने जब दक्षयज्ञ में योगाग्नि के द्वारा अपने-आप को भस्म कर दिया, तब उस समय जो धुआँ उत्पन्न हुआ उस से धूमावती-विग्रह का प्राकट्य हुआ था।

धूमावती की उपासना विपत्ति-नाश, रोग-निवारण, युद्ध-जय, उच्चाटन तथा मारण आदि के लिये की जाती है। शाक्तप्रमोद में कहा गया है कि इनके उपासक पर दुष्टाभिचार का प्रभाव नहीं पड़ता है। देवी धूमावती सूकरी के रूप में प्रत्यक्ष प्रकट होकर साधक के सभी रोग अरिष्ट और शत्रुओं का नाश कर देती है। सृष्टि कलह के देवी होने के कारण इनको कलहप्रिय भी कहा जाता है। ऋग्वेद में रात्रिसूक्त में इन्हें 'सुतरा' कहा गया है। अर्थात ये सुखपूर्वक तारने योग्य हैं। इन्हें अभाव और संकट को दूर करने वाली मां कहा गया है।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार धूमावती और निर्ऋति एक हैं। यह लक्ष्मी की ज्येष्ठा है, अतः ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति जीवनभर दुःख भोगता है।

इनका काकध्वज वासनाग्रस्त मन है, जो निरन्तर अतृप्त रहता है। जीवकी दीनावस्था भूख, प्यास, कलह, दरिद्रता आदि इसकी क्रियाएँ हैं, अर्थात् वेद की शब्दावली में धूमावती कद्रु है, जो वृत्रासुर आदि को पैदा करती है। चौमासा देवी का प्रमुख समय होता है जब देवी का पूजा पाठ किया जाता है।

- मुख्य नाम : **धूमावती ।**
- अन्य नाम : **चंचला, गलिताम्बरा, विरल-दंता, मुक्त केशी, शूर्प-हस्ता, काक ध्वजिनी, रक्षा नेत्रा, कलह प्रिया ।**
- भैरव : **विधवा, कोई भैरव नहीं ।**
- भगवान के २४ अवतारों से सम्बद्ध : **भगवान मत्स्य अवतार ।**
- कुल : **श्री कुल ।**
- दिशा : **आग्नेय कोण ।**
- स्वभाव : **सौम्य-उग्र ।**
- कार्य : **अपवित्र स्थानों में निवास कर, रोग, समस्त प्रकार से दुख को हरने, दरिद्रता, शत्रु का विनाश करने वाली ।**
- शारीरिक वर्ण : **काला ।**
- स्थान : **हिमाचल प्रदेश के कांगडा जिला में "श्री ज्वालामुखी" नामक सिद्धपीठ ।**
- विशेषता : **स्तम्भन विद्या ।**

॥ धूमावती माँ का मंत्र ॥

- मोती की माला या हकीक की माला से नौ माला का जाप कर सकते हैं।
- इस महाविद्या की सिद्धि के लिए तिल मिश्रित घी से होम किया जाता है।
- धूमावती महाविद्या के लिए यह भी जरूरी है कि व्यक्ति सात्विक और नियम संयम और सत्यनिष्ठा को पालन करने वाला लोभ-लालच से दूर रहें। शराब और मांस को छूए तक नहीं।
- हर प्रकार की द्ररिद्रता के नाश के लिए, तंत्र-मंत्र के लिए, जादू-टोना, बुरी नजर और भूत-प्रेत आदि समस्त भयों से मुक्ति के लिए, सभी रोगो के लिए, अभय प्रप्ति के लिए, साधना मे रक्षा के लिए, जीवन मे आने वाले सभी दुखो को नष्ट करने वाली देवी है इसे अलक्ष्मी भी कहा जाता है।
- नोट : धूमावती महाविद्या साधना विधि आप बिना गुरु बनाये ना करें गुरु बनाकर व अपने गुरु से सलाह लेकर इस साधना को करना चाहिए। क्युकी बिना गुरु के की हुई साधना आपके जीवन में हानि ला सकती है।
- मंत्र — **ॐ धूं धूं धूमावती देव्यै स्वाहा: ।**
- सप्ताक्षर मंत्र — **धूं धूमावती स्वाहा ।**
- अष्टाक्षर मंत्र — **धूं धूं धूमावती स्वाहा ।** (मेरुतंत्र)
  धूं धूं धूमावति स्वाहा । (मंत्रमहोदधौ)
  धूं धूमावती स्वाहा ठः ठः । (शाक्त प्रमोद)
- दशाक्षर मंत्र — **धूं धूं धूं धूमावती स्वाहा ।**
- चतुर्दशाक्षर मंत्र — **धूं धूं धुर धूमावती क्रों फट् स्वाहा ।** (शत्रु के उच्चाटन हेतु)
- पंचदशाक्षर मंत्र — **ॐ धूं दूमावति देववदत्त धावति स्वाहा ।** देवदत्त के स्थान पर अमुक पढे
  धूं धूं धूं धुरु धूमावति क्रों फट् स्वाहा ।
- मंत्र — **ॐ धूं धूं धूमावती स्वाहा ।**
  - फल — इस मंत्र का पुरश्चरण एक लाख जप है।
    जप का दशांश तिल मिश्रित घृत से होम करना चाहिए।
    - राई में सेंधा नमक मिला कर होम करने से शत्रु नष्ट होते है।
    - नीम की पत्ति एवं घी से होम करने से ऋण नष्ट होता है।
    - जटामांसी और काली मिर्च से होम करने से कालसर्प दोष एवं क्रूर ग्रह नष्ट होते हैं।
    - रक्त चंदन, शहद, जौ से होम करने से भाग्य चमक उठता है।
    - गुड से होम करने पर गरीबता दुर होती है।
    - काली मिर्च से होम करने पर कारागार से मुक्ती हो जाती है।
    - मीठी रोटी व घी से होम करने पर रोग एवं संकट दुर होता है।

- ध्यानम् :

येत् कालाभ्रनीलां विकलित वदनां काकनासां विकर्णाम् ।
संमार्जन्युक सूर्पैयुत मुसलं करां वक्रदंतां विषास्याम् ॥
ज्याष्ठां निर्वाणवेषा प्रकुटित नयनां मुक्तेकेशीमुदाराम् ।
शुष्कोत्तुंगाति तिर्यक् स्तनभर युगलां निष्कृपां शत्रुहन्त्रीम ॥

- ध्यानम् :

विवर्णा चंचला रुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विवर्ण कुन्तला रूक्षा विधवा विरलाद्विजा ॥
काकध्वजारथारूढ़ा विलम्बित पयोधरा ।
शूर्प हस्तातिरूक्षाक्षी धूपहस्ता वरान्विता ॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्द्दिता नित्यं भयदा कलहप्रिया ॥

- धूमावती स्तोत्र

भद्रकाली महाकाली डमरूवाद्यकारिणी ।
स्फारितनयना चैव टकटंकितहासिनी ॥ ॥ १ ॥

धूमावती जगत्कर्ती शूर्पहस्ता तथैव च ।
अष्टनामात्मकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिसंयुक्तः ॥ ॥ २ ॥

तस्य सर्व्वार्थसिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं हि पार्वती ॥ ॥ ३ ॥

- धूमावती कवच

धूमावती मुखं पातु धूं धूं स्वाहा स्वरूपिणी ।
ललाटे विजया पातु मालिनी नित्यसुंदरी ॥ ॥ १ ॥

- कल्याणी हृदयं पातु हसरीं नाभिदेशके ।
  सर्व्वांग, पातु देवेसी निष्कला भगमालिनी ॥ ॥ २ ॥

- सुपुण्यं कवचं दिव्यं यः पठेद्भक्तिसंयुक्तः ।
  सौभाग्यमतुलं प्राप्त चांते देवीपुरं यथौ ॥ ॥ ३ ॥

॥ श्री सौभाग्य धूमावती कल्पोक्त धूमावती कवचम् सम्पूर्णम् ॥

॥ धूमावती कवचम् ॥

- **श्रीपार्वत्युवाच**
  धूमावत्यर्चनं शम्भो श्रुतम् विस्तरतो मया।
  कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे॥ ॥ १ ॥

- **श्रीभैरव उवाच**
  शृणु देवि परङ्गुह्यन्न प्रकाश्यङ्कलौ युगे।
  कवचं श्रीधूमावत्या: शत्रुनिग्रह कारकम्॥ ॥ २ ॥
  ब्रह्माद्या देवि सततम् यद्वशादरिघातिन:।
  योगिनोऽभवञ्छत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावत:॥ ॥ ३ ॥

- विनियोग ॐ अस्य श्री धूमावती कवचस्य पिप्पलाद ऋषि: निवृत छन्द:, श्री धूमावती देवता, धूं बीजं, स्वाहा शक्तिः, धूमावती कीलकं, शत्रुहनने पाठे विनियोग: ॥

- **ॐ धूं बीजं मे शिर: पातु धूं ललाटं सदाऽवतु।**
  धूमा नेत्रयुग्मं पातु वती कर्णौ सदाऽवतु॥ ॥ १ ॥

- **दीर्घा तुउदरमध्ये तु नाभिं में मलिनाम्बरा।**
  शूर्पहस्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी॥ ॥ २ ॥

- **मुखं में पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम्।**
  सर्वा विद्याऽवतु कण्ठम् विवर्णा बाहुयुग्मकम्॥ ॥ ३ ॥

- **चञ्चला हृदयम्पातु दुष्टा पार्श्वं सदाऽवतु।**
  धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा॥ ॥ ४ ॥

- **प्रवृद्धरोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।**
  क्षुत्पिपासार्द्दिता देवी भयदा कलहप्रिया॥ ॥ ५ ॥

- **सर्वाङ्गम्पातु मे देवी सर्वशत्रुविनाशिनी।**
  इति ते कवचम्पुण्यङ्कथितम्भुवि दुर्लभम्॥ ॥ ६ ॥

- **न प्रकाश्यन्न प्रकाश्यन्न प्रकाश्यङ्कलौ युगे।**
  पठनीयम्महादेवि त्रिसन्ध्यन्ध्यानतत्परै:॥ ॥ ७ ॥

- **दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रन्नैव संस्पृशेत्॥** ॥ ८ ॥

॥ इति भैरवी-भैरव सम्वादे धूमावतीतन्त्रे धूमावती कवचम् सम्पूर्णम् ॥

॥ मां धूमावती अष्टक स्तोत्रम् ॥

- ॐ प्रातर्या स्यात्कुमारी कुसुमकलिकया जापमाला जपन्ती,
  मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा निशायाम् ।
  सन्ध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगा मुण्डमालां,
  वहन्ती सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी कालिका पातु युष्मान् ॥ ॥ १ ॥

- बद्ध्वा खट्वाङ्गकोटौ कपिलवरजटामण्डलम्पद्मयोने:,
  कृत्वा दैत्योत्तमाङ्गैस्स्रजमुरसि शिर शेखरन्तार्क्ष्यपक्षै: ।
  पूर्णं रक्तैसुराणां यममहिषमहाशृङ्गमादाय पाणौ,
  पायाद्वो वन्द्यमानप्रलयमुदितया भैरव: कालरात्र्याम् ॥ ॥ २ ॥

- चर्वन्तीमस्थिखण्डम्प्रकटकटकटाशब्दशङ्घातम्,
  उग्रङ्कुर्वाणा प्रेतमध्ये कहहकहकहाहास्यमुग्रङ्कृशाङ्गी ।
  नित्यन्नित्यप्रसक्ता डमरुडिमडिमां स्फारयन्ती मुखाब्जम्,
  पायान्नश्चण्डिकेयं झझमझमझमा जल्पमाना भ्रमन्ती ॥ ॥ ३ ॥

- टण्टण्टण्टण्टटण्टाप्रकरटमटमानाटघण्टां वहन्ती,
  स्फेंस्फेंस्फेंस्कारकाराटकटकितहसा नादसङ्घट्टभीमा ।
  लोलम्मुण्डाग्रमाला ललहलहलहालोललोलाग्रवाचञ्चर्वन्ती,
  चण्डमुण्डं मटमटमटिते चर्वयन्ती पुनातु ॥ ॥ ४ ॥

- वामे कर्णे मृगाङ्कप्रलयपरिगतन्दक्षिणे सूर्यबिम्बङ्कण्ठे,
  नक्षत्रहारंव्वरविकटजटाजूटके मुण्डमालाम् ।
  स्कन्धे कृत्वोरगेन्द्रध्वजनिकरयुतम्ब्रह्मकङ्कालभारं,
  संहारे धारयन्ती मम हरतु भयम्भद्रदा भद्रकाली ॥ ॥ ५ ॥

- तैलाभ्यक्तैकवेणी त्रपुमयविलसत्कर्णिकाक्रान्तकर्णा,
  लौहेनैकेन कृत्वा चरणनलिनकामात्मन: पादशोभाम् ।
  दिग्वासा रासभेन ग्रसति जगदिदंय्या यवाकर्णपूरा,
  वर्षिण्यातिप्रबद्धा ध्वजविततभुजा सासि देवि त्वमेव ॥ ॥ ६ ॥

- सङ्ग्रामे हेतिकृत्वैस्सरुधिरदशनैर्यद्भटानां,
  शिरोभिर्मालामावद्ध्य मूर्ध्नि ध्वजविततभुजा त्वं श्मशाने प्रविष्टा।
  दृष्टा भूतप्रभूतैः पृथुतरजघना वद्धनागेन्द्रकाञ्ची,
  शूलग्रव्यग्रहस्ता मधुरुधिरसदा ताम्रनेत्रा निशायाम्॥ ॥ ७ ॥

- दंष्ट्रा रौद्रे मुखेऽस्मिंस्तव विशति जगद्देवि सर्वं क्षणार्द्धात्,
  संसारस्यान्तकाले नररुधिरवशा सम्प्लवे भूमधूम्रे।
  काली कापालिकी साशवशयनतरा योगिनी योगमुद्रा रक्तारुद्धिः,
  सभास्था भरणभयहरा त्वं शिवा चण्डघण्टा॥ ॥ ८ ॥

- फलश्रुती

धूमावत्यष्टकम्पुण्यं सर्वापद्विनिवारकम्,
यः पठेत्साधको भक्त्या सिद्धिं विन्दन्ति वाञ्छिताम्॥ ॥ १ ॥

- महापदि महाघोरे महारोगे महारणे,
  शत्रूच्चाटे मारणादौ जन्तूनाम्मोहने तथा॥ ॥ २ ॥

- पठेत्स्तोत्रमिदन्देवि सर्वत्र सिद्धिभाग्भवेत्,
  देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥ ॥ ३ ॥

- सिंहव्याघ्रादिकास्सर्वे स्तोत्रस्मरणमात्रतः,
  दूराद्दूरतरं य्यान्ति किम्पुनर्मानुषादयः॥ ॥ ४ ॥

- स्तोत्रेणानेन देवेशि किन्न सिद्ध्यति भूतले,
  सर्वशान्तिर्ब्भवेद्देवि ह्यन्ते निर्वाणतां व्व्रजेत्॥ ॥ ५ ॥

॥ इत्यूर्द्ध्वाम्नाये धूमावतीअष्टक स्तोत्रं समाप्तम्॥